#4

गुण विज्ञानीय

- वै० द० भाव पदार्थ - 2 स्थान (द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय)
- च० स० षड् पदार्थ - 3 स्थान (सामान्य, विशेष, गुण, द्रव्य, कर्म, समवाय)
- द्रव्य मे आश्रित होता है। द्रव्य - आधार, गुण - आधेय भाव
- आधार - आधेय भाव (आश्रय - आश्रयी भाव की तरह समझ सकते है।)
  ↓ द्रव्य ↓ गुण
- द्रव्य का निष्क्रिय रूप → गुण (अर्थात क्रियावान नही है, कोई कार्य नही कर सकता)
- गुण का अपना अलग अस्तित्व होता है, परन्तु वे द्रव्य के अन्दर समवाय रूप से आश्रित होते है।
- व्युत्पत्ति → "गुण आमंत्रणे" धातु से। (Attraction)
- निरूक्ति → "गुण्यते आमंत्र्यते लोके अनेन इति गुणः।" (वाचस्पत्यम् अनुसार)

→ जिसके कारण लोक या लोकगत लोग द्रव्य की ओर आकर्षित होते है, उसे गुण कहते है।

- लक्षण :→

~~वै० द० → द्रव्याश्रय्यगुणवान् संयोग/विभागयोर्न~~

- वै० द० → द्रव्याश्रय्यगुणवान् संयोग विभागयोर्नकारणमनपेक्ष इति गुण लक्षणम्।
  - वै० द० अध्याय 1, आन्हिक 1, सूत्र 16।

द्रव्य आश्रय, अगुणवान, संयोग व विभाग का कारण नही है, अनपेक्ष है।

- च० स० → समवायी तु निश्चेष्टः कारणं गुणः। - च० सू० 1|51

① समवायी अर्थात जो किसी आधार (द्रव्य) पर आश्रित हो। (आधेय हो)
② निश्चेष्टः अर्थात चेष्टा रहित हो।
③ कारण → गुण अपने ~~समान~~ समान गुणो की वृद्धि मे असमवायि कारण हो।
(अपरोक्ष [indirect contribution])

- कारिकावली के अनुसार :→ (वै० द० पर टीका)

अथ द्रव्याश्रिता ज्ञेया निर्गुणा निष्क्रिया गुणाः। - कारिकावली 86

द्रव्यमेआश्रित, निर्गुण अर्थात गुण रहित, निष्क्रिय - क्रियाहीन होता है।

- विश्वलक्षणा गुणाः। - रस वैशेषिक सूत्र 1|16

जिसका लक्षण विश्व की तरह हो।

★ द्रव्य मे आश्रित, निर्गुण (गुण रहित), संयोग व विभाग का प्रत्यक्ष कारण नही है, व क्रियाहीन होता है।

- **गुणों का वर्गीकरण :-**

(1) वै० द० अनुसार 17 गुण है।
(2) प्रशस्तपादभाष्य (वै०द० का भाष्य) अनुसार 24 गुण है।
(3) न्याय दर्शन भाष्यकारो ने तर्कभाषा अनुसार 24 गुण है।
(4) चरक संहिता के अनुसार 41 गुण है।
(5) चरक संहिता पर टीका - चरकोपकारिका मे योगेन्द्रनाथ सेन जी ने 42 गुण माने हैं। 42 वाँ गुण मन है व 41 गुण च०स० अनुसार है।

- चरक स० के अनुसार 41 गुण हैं। -

① सार्थ गुण - 5
(शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध)

② गुर्वादि गुण - 20
[गुरुमन्दहिमस्निग्धश्लक्ष्णसांद्रमृदुस्थिरा,।
गुणा ससूक्ष्म विशदा विंशति सविपर्यया ॥ - अ०ह०सू०]

1. गुरु - लघु
2. मन्द - तीक्ष्ण
3. हिम (शीत) - उष्ण
4. स्निग्ध - रूक्ष
5. श्लक्ष्ण - खर
6. सान्द्र - द्रव
7. मृदु - कठिन
8. स्थिर - चल
9. सूक्ष्म - स्थूल
10. विशद - पिच्छिल।

③ बुद्धि प्रयत्नान्ता (बुद्धि से प्रयत्न तक) के गुण / अध्यात्मिक गुण - ⑥
(बुद्धि, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न)

④ परादि गुण (पर आदि गुण) - 10
[परत्व, अपरत्व, युक्ति, संख्या, संयोग, विभाग, पृथकत्व, परिमाण संस्कार, अभ्यास]

• सार्थो गुर्वादयो बुद्धिः प्रयत्नान्ताः परादयः।
गुणाः प्रोक्ताः .... ॥ — च० सू० 1/49 (महर्षि चरक)

• वै० द० अनुसार – 17 गुण है।

1) सार्थ गुण – रूप, रस, गन्ध, स्पर्श (4), शब्द – X
2) गुर्वादि गुण – X
3) अध्यात्मिक गुण – बुद्धि, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न (6)
4) परादि गुण – संख्या, परिमाण, पृथकत्व, संयोग, विभाग, परत्व, अपरत्व (7)
(युक्ति, संस्कार, अभ्यास) – X

4 सार्थ गुण 6 अध्यात्मिक गुण 7 परादि गुण 17 कुल गुण	रूपरसगन्धस्पर्शाः संख्याः परिमाणानि पृथकत्वं संयोग-विभागौ परत्वापरत्वे बुद्धयः सुखदुःखेच्छाद्वेषौ प्रयत्नाश्च गुणाः ॥ — वै० द० अध्याय-1, आह्निक 1, सूत्र 6

→ रूप, रस, गन्ध, स्पर्श (RRGS)
बुद्धि, सुख, दुख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न (BSDIDuP)
संख्या, परिमाण, पृथकत्व, संयोग, विभाग, परत्व, अपरत्व। (SPPSVPA)

∴ 17 गुण Acc to वै० द० ॥

• प्रशस्तपाद भाष्य ने इन 17 गुणों के अतिरिक्त 7 गुण माने हैं।

(1) गुरुत्व (2) द्रवत्व (3) स्नेह (स्निग्धत्व) (4) संस्कार (5) धर्म (6) अधर्म (7) शब्द

• सार्थ गुण – (5) , , , , (रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, शब्द)
• गुर्वादि गुण – (3) गुरुत्व, द्रवत्व, स्नेह (स्निग्धत्व), 17 अन्य – X
• अध्यात्मिक – (6) बुद्धि, सुख, दुख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न
• परादि गुण – (8) संख्या, परिमाण, पृथकत्व, संयोग, विभाग, परत्व, अपरत्व, संस्कार।

(2) नही माने (युक्ति, अभ्यास) – X

• (2) अन्य – धर्म व अधर्म

Q.1) आचार्य चरक के अनुसार गुणों का वर्गीकरण लिखते हुए आध्यात्मिक गुणो का वर्णन करें। (5+5)

1) उत्तर :- आचार्य चरक के अनुसार चरक संहिता में 41 गुण बताये है।
या गुणो की संख्या 41 है।

" सार्था गुर्वादयो बुद्धिः प्रयत्नान्ताः परादयः।
गुणाः प्रोक्ताः ---------- ॥ च० सू० 1/49

अ. सार्थ गुण / वैशेषिक गुण = 5
ब. गुर्वादि गुण / शारीर गुण = 20
स. अध्यात्मिक गुण / आत्म गुण = 6
द. परादि गुण / चिकित्सक गुण = 10

कुल → 41 गुण

अ. सार्थ गुण :- शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध।

ब. गुर्वादि गुण :- " गुरुमन्दहिमस्निग्धश्लक्ष्णसांद्रमृदुस्थिरा। "
गुणा ससूक्ष्म विशदः विंशति सविपर्यया ॥ - अष्ट० सू० 1/18

1. गुरु - लघु
2. मन्द - तीक्ष्ण
3. हिम (शीत) - उष्ण
4. स्निग्ध - रूक्ष
5. श्लक्ष्ण - खर
6. सान्द्र - द्रव
7. मृदु - कठिन
8. स्थिर - चल
9. सूक्ष्म - स्थूल
10. विशद - पिच्छिल

स. अध्यात्मिक गुण :- बुद्धि, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न ।

द. परादि गुण :- परत्व, अपरत्व, युक्ति, संख्या, संयोग, विभाग, पृथकत्व, परिमाण, संस्कार, अभ्यास ।

स) अध्यात्मिक गुण :- अध्यात्मिक गुण 6 हैं, आचार्य चरक ने इन्हे बुद्धि प्रयत्नान्ता से सम्बोधित किया है अर्थात बुद्धि से प्रयत्न तक के गुण । इन्हे आत्म गुण व बुद्धि आदि गुण की संज्ञा भी दी है।

"इच्छा द्वेषः सुखं दुःखं प्रयत्नश्चेतना धृतिः ।
बुद्धि स्मृत्यहंकारो लिंगानि परमात्मनः ॥ - च० शा० 1/72

यहाँ धृति, स्मृति व अंहकार को बुद्धि के अंतर्गत लिया गया है।

1) बुद्धि :- [Wisdom or intellect] सर्वव्यवहारहेतुर्गुणो बुद्धिर्ज्ञानम् । - तर्कसंग्रह

सभी व्यवहारों का जो हेतुभूत गुण है अर्थात जिस गुण के कारण सभी व्यवहार होतें है, उसे बुद्धि गुण कहते है।

- बुद्धि के दो भेद होते है - 1. स्मृति
  2. अनुभव

2) सुख :- [Pleasure] धर्मजन्यं अनुकूलवेदनीयं गुणः सुखम् । - प्रशस्तपाद

धर्म के आचारण से जो आत्मा मे अनुकूल सवेदना उत्पन्न होती है उसे सुख कहते है।

3) दुःख :- [Sorrow] अधर्मजन्यं प्रतिकूलवेदनीयं गुणो दुःखम् । - प्रशस्तपाद

अधर्म के आचारण से जो आत्मा मे प्रतिकूल वेदना होती है उत्पन्न होती है, उसे दुःख कहते है।

4) इच्छा :- [Desires] स्वार्थं परार्थं वाऽप्राप्त प्रार्थनेच्छा । - प्रशस्तपाद

अपने या दूसरे के लिए अप्राप्त वस्तु की प्रार्थना या कामना करना इच्छा है।

5) द्वेष :- [Malice] प्रज्वलनात्मको द्वेषः । - प्रशस्तपाद

जिसके कारण मनुष्य मे प्रज्वलन (जलन) का भाव हो उसे द्वेष कहते है।

6) प्रयत्नः- [effort] कृतिः प्रयत्नः । - तर्कसंग्रह
कार्य प्रारम्भ करने की चेष्टा प्रयत्न कहलाती है।

पदार्थ विज्ञान

समवाय विज्ञानीय

- व्युत्पत्ति → सम् + अव + इ + अच् → समवाय

  अर्थात मिलाप या सम्मिश्रण

→ वैशेषिक दर्शन ने समवाय को छठा पदार्थ बताया है।
→ अविच्छेद्य संयोग को समवाय कहा जाता है।
→ समवाय 2 प्रकार है – (1) नित्य (2) अनित्य
→ वैशेषिक दर्शन अनुसार समवाय एक है और नित्य है, तथा प्रभाकर अनुसार समवाय अनेक है।

- ~~परिभाषा → पृथ्वी आदि द्रव्यो और उनके मध्य~~

- परिभाषा → पृथ्वी आदि द्रव्यो और उनके गुणों के मध्य जो अपृथग्भाव (अलग न होने वाला भाव) सम्बन्ध है, उसे समवाय कहते है।
  यह नित्य है, द्रव्य के साथ गुण समवाय सम्बन्ध से रहते है।
  (चरक संहिता के अनुसार)

- समवाय के लक्षण →

  - समवाय "नित्यसम्बन्ध" को कहते है।
  - "अयुतसिद्ध पदार्थों मे समवाय पाया जाता है।"

  उदा०→
  (1) अवयव व अवयवी
  (धागा) (वस्त्र)
  (2) गुण व गुणी
  (3) क्रिया व क्रियावान
  (4) जाती व व्यक्ति
  (5) विशेष व नित्य द्रव्य

- समवाय को स्वतंत्र पदार्थ मानने की युक्ति →

1. समवाय को एक स्वतंत्र पदार्थ माना गया है, क्योकि यदि द्रव्य और गुण सत्य है तो समवाय भी सत्य है व स्वतंत्र पदार्थ है।

2. समवाय एक स्वतंत्र पदार्थ है क्योकि इसे अन्य 5 पदार्थो द्रव्य, गुण कर्म, सामान्य, विशेष मे सम्मिलित नही किया जा सकता है।

कर्म - विज्ञानीय

- वै० द० ने कर्म को भाव पदार्थों मे तीसरा स्थान दिया गया है।
- चरक सं० ने षड् पदार्थो मे षष्ठ स्थान दिया है।

- व्युत्पत्ति (derivation) → कृ + मनिन् प्रत्यय (शब्दकल्पद्रुम)

- कर्म की निरुक्ति (Etymological derivation) → "यत् क्रियते तत् कर्म"
  जो किया जाता है, उसे कर्म कहते है।

- कर्म लक्षण → तर्कसंग्रह अनुसार → चलनरूपी क्रिया को कर्म कहते है।

- वै० द० अनुसार → "एकद्रव्यमगुणं संयोगविभागयोरनपेक्षकारणमिति कर्म लक्षणम् ॥"

एक द्रव्य मे होने वाला, अगुण (गुण रहित), संयोग व विभाग का अनपेक्ष कारण ॥

- चरक संहिता के अनुसार → ① संयोग व विभाग का कारण होता है।
  ② द्रव्य मे आश्रित होता है।
  ③ कर्तव्य की क्रिया को कर्म कहते है।
  ④ कर्म को किसी दूसरे कारण की अपेक्षा नही होती है।

आयुर्वेद अनुसार कर्म के अन्य लक्षण → ① प्रयत्नादि कर्म चेष्टितमुच्यते ॥

② यत् कुर्वन्ति तत् कर्म ।
कार्य करने के लिए जो चेष्टा की जाती है, उसे प्रवृत्ति कहते है।
③ वही क्रिया है, वही कर्म है, यत्न है वही कार्यसम्मारम्भ है।

- कर्म के भेद :→ 5 प्रकार के होते है। (तर्कसंग्रह अनुसार) (वै० द० -)
  ① उत्क्षेपण (Upward projection)
  ② अपक्षेपण (downward ")
  ③ आकुंचन (Contraction)
  ④ प्रसारण (Expansion)
  ⑤ गमन (all motions)

classmate
Date
Page

• आयुर्वेद अनुसार कर्म के भेद →

① द्विविध कर्म → 1. लौकिक – शारीर चेष्टा
2. आध्यात्मिक – परमात्मा से साक्षात्कार

द्विविध उपक्रम → ① सन्तर्पण ② अपतर्पण

द्विविध कर्म → दैव – पूर्व जन्म के किये गये कर्म।
पुरुषकार → इस जन्म " " "

② त्रिविध कर्म → ① वाचिक ② मानसिक ③ शारीरिक

बल के अनुसार त्रिविध कर्म → दैव व पुरुषकार के अनुसार
① हीन ② मध्य ③ उत्तम

संयोग के भेद से → ① एककर्मज ② द्वन्दकर्मज ③ सर्वकर्मज

कर्म के आधार पर → ① दोषप्रशमन ② धातुप्रदूषण ③ स्वस्थरहित

सुश्रुत अनुसार → ① पूर्वकर्म ② प्रधानकर्म ③ पश्चात् कर्म

• पंचकर्म → ① वमन ② विरेचन ③ निरूह बस्ति ④ अनुवासन बस्ति
⑤ शिरोविरेचन

• अष्टविध शस्त्रकर्म → ① छेदन ② भेदन ③ लेखन ④ वेधन
⑤ एषण ⑥ आहरण ⑦ विस्रावण ⑧ सीवन

कर्म की आयुर्वेद मे उपयोगिता
① द्रव्य मे संयोग विभाग कराना
② धातु मे साम्यता करना
③ रोग आदि की कर्मो द्वारा उत्पत्ति।
④ रोग को कर्मो द्वारा निदान।
⑤ द्रव्यो का वर्गीकरण कर्मों द्वारा होता है।
① ऊर्ध्वभाग द्रव्य ② अधोभाग द्रव्य

⑥ कर्मो द्वारा चिकित्सा
जैसे पंचकर्म, क्षारकर्म
अग्निकर्म, शस्त्रकर्म
आदि।

अभाव पदार्थ

व्युत्पत्ति :- [अ + भाव]
अ → नही
भाव → अस्तित्व [Existence]

जिसका अस्तित्व नही हो उसे अभाव कहते है।

① वैशेषिक दर्शन → षड् भाव पदार्थ माने है, अभाव को नही माना है।
↓
प्रशस्तपाद (भाष्यकार of वैशेषिक सूत्र) ने अभाव को माना है।
↓
अभाव निरूपण
↓
कालान्तर मे पदार्थ को दो भागो मे वर्गीकृत किया गया।
① भाव पदार्थ ② अभाव पदार्थ

② आयुर्वेद ने अभाव को पदार्थ नही माना है।

चरक संहिता सूत्रस्थान 11 वें अध्याय के 17 वें श्लोक मे चरक जी ने असत बताया जिसे अभाव रूप मे जाना जाने लगा।

श्लोक → द्विविधमेव खलु सर्वं सच्चासच्च, तस्य चतुर्विधा परीक्षा –
आप्तोपदेशः, प्रत्यक्षम्, अनुमानं, युक्तिश्चेति ॥ च० सू० 11/17

सच्चासच्च
↳ सत, असत च (सन्धि विच्छेद)

Acc. to चरक →

पदार्थ
- सत → भाव
- असत → अभाव

लक्षण :- ① असत अभावरूपम् [आचार्य योगीन्द्रनाथ सेन (टीकाकार commentator of चरक)]
↓
Non-existence.
(जिसकी सत्ता नही है, जो मौजूद नही है वह अभाव है।)

② गतो भावोऽभावम् (भाव का न होना ही अभाव है।)

very Imp ③ भावभिन्नत्वं वा प्रतियोगिज्ञानाऽधीन ज्ञानविषयत्वम् अभावत्वम् ॥

भावभिन्नत्वं अर्थात भाव से भिन्न यानि अभाव
अभाव का प्रतियोगी – भाव
भाव के ज्ञान से अभाव का ज्ञान होगा या होता है।
या अभाव का ज्ञान उसके प्रतियोगी भाव से होता है]

या अभाव का ज्ञान भाव के ज्ञान पर निर्भर करता है।

eg. Eye sclera of jaundice diseased people

भाव - yellow colour of scelera

After treatment

अभाव — yellow colour of sclera is dissappear.

अभाव भेद :-

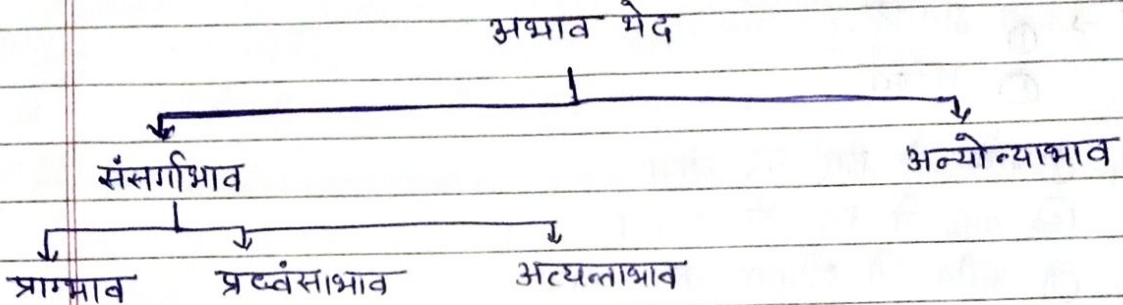

अभाव भेद
- संसर्गाभाव
  - प्रागभाव
  - प्रध्वंसाभाव
  - अत्यन्ताभाव
- अन्योन्याभाव

① प्रागभाव → प्राक् + अभाव [Prior Non-existence]

उत्पत्ति से पहले का अभाव प्रागभाव है।

eg. घड़े की उत्पत्ति से पहले उसका अभाव

[क्योंकि कुम्हार द्वारा बनने से पहले घड़े का अभाव था, बनने पर वह भाव हो गया, यही बनने से पूर्व का अभाव प्रागभाव है।]

लक्षण → ① अनादि (हमेशा से है)

② सअन्त (खत्म हो गया)

---

origin ① आदि - have beiguning जिसकी शुरुआत है।

No origin ② अनादि - जो हमेशा से है, जिसकी शुरुआत का पता नही लगा सकते हैं]

ending ③ अन्त → जो खत्म हो गा

Non-ending ④ अनन्त → जिसका कभी अन्त न हो जो कभी खत्म नही होगा।

---

② प्रध्वंसाभाव - प्रध्वंस + अभाव (Subsequent Non-existence)

[नष्ट होना]

नष्ट होने के बाद किसी वस्तु का अभाव प्रध्वंसाभाव है।

eg.

घड़े के टूटने पर उसका अभाव।

④ लक्षण – ① आदि
② अनन्त

प्रध्वंसाभाव आदि है परन्तु अनन्त है।

③ अत्यंताभाव — Absolute / Eternal non-existence

① त्रैकालिक — भूत, भविष्य, वर्तमान — त्रैकालिक अभाव को ही अत्यन्ताभाव कहते हैं।

लक्षण → ① अनादि
② अनन्त

उ. ① गधे के सिर पर सींग
② वायु मे रूप का अभाव
③ अग्नि मे शीतता का अभाव

ब. अन्योन्याऽभाव [Mutal non-existence] –
↳ एक वस्तु का दूसरे मे अभाव

① एक वस्तु का दूसरे वस्तु से भिन्न होना अन्योन्याऽभाव है।
(तादात्म्य सम्बन्ध) – (दो वस्तुओ का परस्पर भिन्न होना)

उ. नीम मे गुडुची का अभाव
अग्नि मे जल का अभाव

स) संसर्गाभाव [Correlational Non-existence]
एक वस्तु के सम्बन्ध मे अन्य वस्तु का अभाव

उ. नल मे पानी का अभाव।
ज्वर मे रोगी को स्वेद न आना।

आयुर्वेद मे अभाव का चिकित्सीय महत्व

① असत् माना है। अभाव को स्वतन्त्र रूप से पदार्थ नही माना है।

② त्रिविध-रोग आयतन (मे अयोग का उल्लेख) — अभाव से समानता रखता है।
① इन्द्रियो का अपने विषयो से अयोग (असात्म्यइन्द्रियसंयोग)
② काल का अयोग (काल)
③ वेगादि के अयोग के लक्षण (प्रज्ञापराध)

③ अनेक व्याधियो मे ।

- ① राजयक्ष्मा मे भूख न लगना अर्थात भूख का
(T.B)
अभाव

अरुचि, अश्रद्धा, अरसज्ञता यानि इनका अभाव
↓
रस के ज्ञान का अभाव

- व्याधियो के कई लक्षणो मे अभाव का पता चलता है।

④ चिकित्सा द्वारा व्याधि नाश होने पर व्याधि के लक्षणों का अभाव इत्यादि ।

⑤ अनशन (अन् अशन) अर्थात आहार का अभाव कई व्याधि का कारण है।

-o-

Rajput

All the Best
Notes By :- शाश्वत आयुर्वेद
(Surya Classes)